Dated 31/8/2020

B.A Part - 1 philosophy

प्रो० अनीता कुमारी गुप्ता
जे० के० कॉलेज बिरौल

बौद्ध के द्वितीय आर्य सत्य की व्याख्या करें ?

Ans:- बुद्ध ने भारतीय परम्परा का निर्वहन करते हुए अपने द्वितीय आर्य सत्य में दुःख के कारण की विवेचना की है। इस सन्दर्भ में उन्होंने एक सिद्धांत का सहारा लिया है जिसे प्रतीत्यसमुत्पाद कहा गया है। पाली भाषा में इसे पटिच्चसमुत्पाद कहा जाता है। प्रतीत्यसमुत्पाद दो शब्दों प्रतीत्य एवं समुत्पाद के संयोग से बना है जिसका अर्थ है किसी वस्तु के उपस्थित होने पर किसी अन्य वस्तु की उत्पत्ति। इस सिद्धांत का आधार कारण-कार्य नियम है जिसके अनुसार प्रत्येक कार्य का कोई-न-कोई कारण अवश्य होता है। कोई भी घटना, वस्तु या पदार्थ अकारण नहीं है। दुःख भी एक घटना है जिसे यहाँ जरामरण कहते हैं जरा का अर्थ है, बुढ़ापा तथा मरण का अर्थ है मृत्यु। जरामरण संसार के समस्त दुःखों का प्रतीक है। प्रतीत्यसमुत्पाद सिद्धांत के अनुसार इस जरामरण का भी कोई-न-कोई कारण अवश्य होगा। बुद्ध के अनुसार जरामरण का कारण जाति है। जन्म ग्रहण करना ही जाति कहलाता है। यदि व्यक्ति शरीर धारण न करे तो जरामरण नहीं हो सकता है। प्रतीत्यसमुत्पाद के अनुसार जाति का कारण भव है। जन्म ग्रहण करने की प्रवृत्ति को भव कहते हैं। सांसारिक विषयों के प्रति हमारी आसक्ति अर्थात उपादान ही भव का कारण है। उपादान के कारण ही हममें जन्म लेने की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है। उपादान का कारण तृष्णा है। शब्द, स्पर्श, रंग इत्यादि विषयों के भोग की वासना को तृष्णा कहते हैं। इसी के कारण मनुष्य सांसारिक विषयों के पीछे भागता है। प्रतीत्यसमुत्पाद के अनुसार तृष्णा का कारण वेदना है। बुद्ध के अनुसार षडायतन का कारण नामरूप है अतीत जीवन के कर्मों के प्रभाव से ही संस्कार का निर्माण होता है। इस संस्कार का कारण अज्ञान या अविद्या है। ज्ञान के अभाव को ही अविद्या या अज्ञान कहते हैं।

अतः यह कहा जा सकता है कि दुःख का कारण जाति है, जाति का कारण भव है, भव का कारण उपादान है, उपादान का कारण तृष्णा है, तृष्णा का कारण वेदना है, वेदना का कारण स्पर्श है, स्पर्श का कारण षडायतन है, षडायतन का कारण नामरूप है, नामरूप का कारण विज्ञान है विज्ञान का कारण संस्कार है तथा संस्कार का कारण अविद्या है दुःख के कारण के रूप में बुद्ध ने बारह कड़ियों की विवेचना की है जिनमें जरामरण पहली कड़ी तथा अविद्या अंतिम कड़ी है।